Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A semester - I Philosophy C.C-01
Indian Epistemology & Logic.

1.

" असत्‌ख्यातिवाद "

APPOINTMENTS / MEETINGS

(2.) असत् ख्यातिवाद (शून्य ख्यातिवाद)

यह शून्यवादी बौद्धों का सिद्धान्त है। इनके अनुसार न तो बाह्य जगत कोई पदार्थ है और न ही विज्ञान है। सभी वस्तुएँ तत्वतः अभाव रूप ही हैं। जब जो वस्तु न आदि में है, न अंत में वह मध्य में कैसे रह सकती है? अतः सभी पदार्थ शून्य रूप ही हैं। शून्यता ही परमार्थ सत्य है।

अब जब सब कुछ शून्य है, असत है तब भ्रम भी असत होगा। अब जब शुक्ति ही असत है तो उसके स्थान पर दिखने वाली रजत भी असत ही होगी। भ्रम को असत कहने के कारण यह सिद्धान्त असत्‌ख्यातिवाद कहलाता है।

'ख्यातिपंचक' में इस मत का वर्णन मिलता है। यह मत शून्यतावादी बौद्धों का है। इन मत के अनुसार प्रत्येक ज्ञान में शून्य का अर्थात निरविलम्ब ही भासित होता है। 'शुक्ति-रजत' के ज्ञान में न तो 'शुक्ति' सत्य है, न 'रजत' सत्य है और न 'भ्रम' सत्य है। और इस सम्पूर्ण बोध में अभाव ही भाव रूप से भासित होता है। शुक्ति-रजत में जिस रजत का बोध ज्ञाता को होता है उसको

न तो बाह्य सत्ता है न मानसिक।
मत से कि शुक्ति अन्यता वादियों के इस
'रजत' का बोध रजत के बोध में जिस
असत् अथवा होता है वह रजत
नहीं हुआ जा सकता मिथ्या है— फलतः असत्
ने असत् ख्यातिवाद किन्तु नैयायिकों
विरुद्ध, गंभीर आपत्तियाँ की इस धारणा के
प्रकट की है—
प्रश्न करते हैं कि 1. नैयायिक जयन्त भट्ट,
क्या है? क्या 'असत्ख्याति' का अर्थ
किसी ऐसी वस्तु से है जो 'कहीं भी अस्तित्ववान
नहीं है? अथवा क्या यहाँ असत का अर्थ
किसी ऐसी वस्तु में है जो अन्यत्र (यथा
स्मृति आदि में) अस्तित्ववान है? जयन्त
भट्ट के अनुसार यदि असत को पहले
अर्थ में स्वीकार किया जाए तो प्रश्न है
कि ऐसी अविद्या 'असत' की धारणा कैसे
बनाती है? यदि यह असत धारणागत है
तो इस प्रकार कम से कम इसका मानसिक अथवा
बौद्धिक अस्तित्व तो सिद्ध हो ही जाता है
फिर इसे 'असत' क्यों कहा जाता है?'
पुनः जयन्त भट्ट के अनुसार यदि असत
को दूसरे अर्थ में स्वीकार किया जाये
तो असत् ख्यातिवाद विपरीत ख्यातिवाद
के समान होगा अर्थात असत्ख्यातिवाद
जैसे ही यह स्वीकार करेगा कि भ्रम
में भासित रजत अन्यत्र अस्तित्ववान है,
उसके इस कथन का कोई अर्थ नहीं

रहेगा कि भ्रम की वस्तु अथवा रजत असत है।

2. जयन्त भट्ट पूछते हैं कि यदि रजत की बाह्य अथवा आन्तरिक किसी प्रकार की सत्ता ही नहीं है तो वह भासित क्यों होता है? इस प्रश्न के उत्तर में यदि बौद्ध यह कहते हैं कि वह रजत अन्तर की वासना के कारण भासित होता है तो जयन्त भट्ट के अनुसार इसमें तर्क दोष है क्योंकि वासना तो अर्थ अथवा विषय के संसर्ग से उपजती है न कि विषय वासना के कारण अर्थ अथवा विषय उपजता है।

असत्ख्यातिवाद बौद्ध शुक्ति रजत के ज्ञान में शुक्ति और रजत दोनों को ही असत् कहते हैं। इसमें भ्रम और यथार्थ का भेद खण्डित होता है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से वैध प्रत्यक्ष और भ्रमात्मक प्रत्यक्ष में भेद किया जाता है। इस रूप में ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से शुक्ति का प्रत्यक्ष वैध प्रत्यक्ष है और रजत का प्रत्यक्ष अवैध अथवा भ्रमात्मक प्रत्यक्ष है।

इस आपत्ति का उत्तर बौद्ध तत्त्वमीमांसा में ढूंढा जा सकता है। बौद्ध मतानुसार सत्य दो हैं परमार्थ और संवृति। पारमार्थिक दृष्टि से तो शुक्ति और

रजत दोनों ही व्यवहार्य अथवा असत
है किन्तु सांवृतिक अथवा लौकिक
होने व्यवहार की दृष्टि से शुक्ति सत्य
है और रजत भ्रम। रजत यहाँ भ्रमात्मक
स्पष्ट है कि वह परवर्ती बोध द्वारा
खण्डित होता है। पुनः भ्रम में जिस रजत
का प्रत्यक्ष होता है वह रजत अर्थक्रिया
कारित्व रहित होने के कारण भी असत्